व्याख्यान - 15

बी.ए. I

NRB

रश्मिरथी

टिप्पणियाँ

तृतीय सर्ग

खम ठोंकना = भुजाएँ अपने हाथों ठोंकना। अपने बाहुबल के भरोसे भिड़ना। वर्तिका = बत्ती। इक्षु-दण्ड = ईख का डण्डा। चूप-धाम = चूप और पसीना। परिधि-बन्ध = क्षितिज, चक्रवाल। मैनाक-मेरु = दो पौराणिक पर्वत। निकर = राशि। अकाण्ड = आकस्मिक। मन्द्र - मन्दर = पर्वत। जिष्णु = इन्द्र, जो सदा जीते। जलपति = वरुण। धनेश = कुबेर। लोकपाल = दिक्पाल, जिनकी संख्या दस है। वायस = कौआ। धृतराष्ट्र विदुर सुख पाते थे = विराट रूप दर्शनार्थ उस समय धृतराष्ट्र को दृष्टि मिल गयी थी। निरशन = अशन (भोजन) से हीन। अघटनीय = असम्भव। पृथा = कुन्ती, इसलिए अर्जुन का एक नाम पार्थ है। कुलपाली = वंश का पालन करनेवाली। अपरिणीता = बिन-ब्याही। प्रत्यय = विश्वास। प्रभूत = बहुत अधिक। चाकचिक्य = चकाचौंध। पीते जो वारि प्रपातों में = गरुड़, जो झरने का पानी ऊपर ही पी लेते हैं। अयन = गृह। फणिबन्ध = नाग-पाश। जब कोई देवता नाग-पाश में बँध जाते हैं, तब उन्हें छुड़ाने को गरुड़ बुलाये जाते हैं। धरती का हृदय जुड़ाते हैं = पृथ्वी ने गरुड़ से कहा कि अमृत लाकर मुझे भी दो। गरुड़ स्वर्ग से अमृत ले भागे, किन्तु उन्हें देख लिया गया। बड़ा उन्हें

Date : / /

दिन गया। फिर भी थोड़ा-सा अमृत वे पृथ्वी पर ले ही आये।

कीजै - दीजै = । कीजिये और दीजिये के पुराने रूप।

अवलेर = विलम्ब।

विनीता कुमारी
30-04-2020

Scanned with CamScanner